मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता ।　　　　दुनियाँ के मजदूरो, एक हो !

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है ।　　　　दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 23　　　　मई 1990　　　　50 पैसे

मई दिवस

आज इसका मतलब

आठ घन्टे काम के दिन के लिये आन्दोलन कर रहे मजदूरों पर अमरीका के शिकागो शहर में 1 मई 1886 को चली पूंजीवादी गोलियों ने पहली मई को दुनियां-भर में मजदूरों के सांस लेने की फुरसत के लिए संघर्षों का प्रतीक बना दिया। 1989 में अमरीका के उसी शिकागो शहर में कम्पलसरी ओवरटाइम के जरिये हर रोज 12-13 घन्टे और हफ्ते में सातों दिन काम करने को मजबूर किये जा रहे मजदूरों ने हड़तालें की और माँग की है कि एक दिन में दस घन्टे ड्यूटी और हफ्ते में एक दिन की छुट्टी का कानून बने। इस बारे में अधिक जानकारी के लिये हमारा मार्च 90 का अंक देखें।

आठ घन्टे के लिए संघर्ष के शिखर के सौ साल बाद दस घन्टे की बात! आइये देखें कि माजरा क्या है।

आइये पहले काम के दिन का मतलब समझें। काम के दिन का मतलब है एक दिन, यानि 24 घन्टे में एक व्यक्ति कितने घन्टे काम करे कि उसके परिवार का भरण-पोषण हो सके। इसलिए आठ घन्टे काम के दिन का मतलब है कि आठ घन्टे काम के लिए एक व्यक्ति को इतना वेतन मिले कि उसके परिवार की गुजर-बसर हो सके। एक व्यक्ति के काम से परिवार-पालन की बात ध्यान में रखिए।

आज से सौ साल से भी पहले मजदूरों ने जब आठ घन्टे काम के दिन की माँग की थी तब के मुकाबले आज के मजदूर कई गुणा ज्यादा प्रोडक्सन करते हैं। इतना ही नहीं, आज परिवार के गुजारे के लिए पति-पत्नि, बच्चे-बूढ़े तक को काम-धन्धे के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ती है। ऊपर से आठ घन्टे की ड्यूटी के बाद ओवर टाइम-पार्ट टाइम-छोटे मोटे धन्धे के बिना परिवार की गाड़ी नहीं चलती। और इतने सब के बावजूद मजदूरों का जीवन स्तर गिरता जा रहा है। **यूं तो अब आठ घन्टे ड्यूटी का नियम है और आज भी एक दिन में 24 घन्टे ही होते हैं पर आज परिवार के भरण-पोषण के लिये आठ नहीं बल्कि 26 घन्टे रोज काम करना जरूरी है। पति-पत्नी-बच्चों-बूढ़ों द्वारा एक दिन में 28-30 घन्टे काम के बाद भी मुश्किल से परिवार का गुजारा होता है। आज काम का दिन वास्तव में 26-28 घन्टे का हो गया है।** वैसे, पूंजीवाद आपको काम न करने की छूट दे कर हवा खाने की छूट ही नहीं देता बल्कि करोड़ों को बेरोजगार बना कर सड़कों की धूल छानने को मजबूर भी करता है। इन परिस्थितियों में काम के घन्टे चार या छह को मजदूर आन्दोलन का एक बड़ा मुद्दा बताने वालों को हद से हद एक तखलीफ दायक मजाक के तौर पर ही लिया जा सकता है। और, "काम के घन्टे चार करो, बेरोजगारी दूर करो!" वाले नारों को तो बेहूदी बकवास ही कहा जा सकता है।

पिछले सौ साल में मजदूरों द्वारा लगातार प्रोडक्सन बढ़ाते जाने के बावजूद काम के दिन के बढ़ते जाने के सिलसिले को समझने के लिए आइए थोड़ा माथा-पच्ची करें।

पूंजीवाद की जीवन-क्रिया पर नजर डालने पर 1900 के आस-पास पूंजीवाद के जीवन में एक खास मोड़ नजर आता है। इस सदी के आरम्भ में ही पूंजीवादी व्यवस्था अपनी मरणासन्न अवस्था में, अपने पतनशील चरण में दाखिल हुई। कैसे यह हुआ इसकी चर्चा हम यहाँ नहीं करेंगे। पर हां, पूंजीवाद में आये इस महत्वपूर्ण परिवर्तन का सब सामाजिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय असर पड़ा। पूंजीवादी व्यवस्था के अन्य संकटों में इसकी मरणासन्न अवस्था के संकट के जुड़ने का ही नतीजा है कि गंगा उल्टी बहने लगी — हर रोज 18-20 घन्टे तक काम करने को मजबूर मजदूरों ने लड़-लड़ कर आठ घन्टे काम के दिन की शिखर को छुआ ही था कि पूंजीवाद में आये इस परिवर्तन ने काम के दिन को बढ़ाना शुरू कर दिया। कागजों पर आठ घन्टे का ही नियम रहा पर कम्पलसरी ओवरटाइम से इसे बढ़ाया गया गिनती में रुपये बढ़ाए गये पर असल तनखा में कटौती करके एक व्यक्ति की नौकरी से परिवार के खर्च को चलाना असम्भव करके परिवार के अन्य सदस्यों को नौकरी के लिये मजबूर किया गया। इस प्रकार आठ घन्टे काम के दिन को 26-28 घन्टे काम के दिन में बदला गया — पति (8 घन्टे ड्यूटी + 4 घन्टे ओवर टाइम + 2 घन्टे पार्ट-टाइम) + पत्नी (8 घन्टे ड्यूटी और घर के काम-काज) + बच्चे-बूढ़े (6 घन्टे की ड्यूटी)।

और यह सब किसी व्यक्ति विशेष की वजह से नहीं हुआ। यह किसी देश-विशेष की खासियत भी नहीं है। यूरोप-अमरीका-रूस-चीन में परिवार के लगभग सब सदस्यों का नौकरी करना और फिर भी छोटे से छोटे परिवार की कोशिश करना उन लोगों का हिन्दुस्तानियों से अलग कोई चीज होने की वजह से नहीं है बल्कि विकसित पूंजीवाद का अनिवार्य परिणाम है। नशाखोरी का बढ़ना तो बीमारी के लक्षण मात्र हैं।

पूंजीवाद के पतनशील चरण में प्रवेश के साथ ही हर पूंजी इकाई को पूंजी के तौर पर जिन्दा रहने के लिए हाथ-पैर मारना तेज करना पड़ा। इस वजह से पूंजीवादी गुटों में लड़ाई-झगड़े तो तेज हुए ही, पतनशील पूंजीवाद में तो मजदूरों की तो शामत ही आ गई। सस्ते माल की तोप हासिल करने के लिये हर देश के मजदूरों से कम वेतन पर अधिक प्रोडक्सन लेने की दुनियां-भर के पूंजीवादी गुटों में होड़ मच गई। और इसके साथ-साथ जरूरी बनी फौजी तोपों के बढ़ते खर्चे के लिए भी मजदूरों को दुनियां-भर में निचोड़ा जा रहा है। पूंजीवादी व्यवस्था का यह घनचक्कर इस किस्म का है कि गोर्बाचोव हो चाहे बुश, इन्दिरा हो चाहे भुट्टो, सब के सब आँखों पर पट्टी बाँध और हाथों में नंगे चाकू ले कर दौड़ने को मजबूर हैं। इस सब का नतीजा यह दुख-दर्द भरी दुनियाँ हमारे सामने है। ऐसे में आँखों पर पट्टी बांधने को मजबूर पूंजी के नुमाइन्दों से यह आशा करना कि वे हमें दिशा दिखायेंगे, खुद को धोखा देना है — कोई भी वी पी सिंह मजदूरों की हालत सुधारने के लिये कुछ भी नहीं कर सकता।

मजदूरों की सहूलियतें अब बढ़ नहीं रही बल्कि संघर्षों के जरिये जो सहूलियतें हाशिल की जा चुकी हैं उनमें भी दुनिया के हर देश में आज कटौती की जा रही है। पर इससे सहूलियतें बढ़ाने के नाम पर लाल-पीले-तिरंगे ड्रामेबाजों के फर्जी संघर्षों वाले नाटक बन्द नहीं हुये हैं। इन रंगे सियारों को तो मजदूर ठोकर मारकर ही भगा सकेंगे। मजदूरों के लिये मई दिवस का आज मतलब क्रान्ति की राह पर बढ़ना है। मजदूर क्रान्ति जिन्दाबाद!

—×—

दो नजरिये

सस्ता माल, मजबूत देश और शक्तिशाली फौज देशों के रूप में संगठित पूंजी की इकाइयों की मुख्य आवश्यकताएं हैं। हावी सोच अपने इन तीन स्तम्भों को वाद-विवाद से परे बताती है। लेकिन दूसरे नजरिये, क्रान्तिकारी दृष्टिकोण से देखने पर इन तीन स्तम्भों का मजदूर वर्ग के शोषण के लिये जरूरी होना स्पष्ट होता है। यह हमने पिछले अंकों में देखा है। आज समाज में बढ़ती हिंसा मानवों को विचलित कर रही है! दुनियां भर में मार काट तेजी से बढ़ रही है। आज इससे कोई भी इन्कार नहीं करता। इस लेख में हम इस बढ़ती हिंसा की स्थिति को समझने के दो नजरियों को स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे।

(शेष अगले पेज पर)

हमारे लक्ष्य हैं:— 1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिये इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुचाने के प्रयास करना। 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनियां के मजदूरों की एकता के लिये काम करना और इसके लिये आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बटाना। 3. भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी संगठन बनाने के लिये काम करना। 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिये काम करना।

समझ, संगठन और संघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को ताल-मेल के लिये हमारा खुला निमन्त्रण है। बातचीत के लिये बेझिझक मिलें। टीका टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे।

संपर्क—मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001

एस्कोर्ट्स

नाटक खत्म, बोझा लादो !

22 मार्च को शुरू किया एस्कोर्ट्स के प्लान्टों में प्रोडक्शन बन्द वाला अपना नाटक मैनेजमेंट और बिचौलियों ने 20 अप्रेल को खत्म करने की घोषणा की। मैनेजमेंट और बिचौलियों के इधर-उधर बिखरे लिखित बयानों के आधार पर हमने पिछले अंक में प्रोडक्शन बन्द करने के इस नाटक का जो कारण बताया था वह सही निकला। **मजदूरों को पचास परसैन्ट वर्क लोड बढ़वाने के लिए "तैयार करने" के वास्ते ही मैनेजमेन्ट और बिचौलिये प्रोडक्शन बन्द वाला यह नाटक कर रहे थे।** पर इस बार 19 अप्रेल को बिचौलियों के चेयरमैन द्वारा मिटिंग में 20 अप्रेल को प्रोडक्शन शुरू करने के ऐलान को एस्कोर्ट्स मजदूरों ने ठुकरा दिया। 20 अप्रेल को प्रोडक्शन शुरू होना तो दूर रहा, एस्कोर्ट्स के ज्यादातर प्लान्टों में सफाई तक नहीं हुई——लगता है कि मैनेजमेंट-बिचौलिये गठजोड़ को उनकी पोल खुलने पर जल्दबाजी में "कच्चे" माल पर हाथ डालना पड़ा है। काम शुरू न होने से घबरा कर बिचौलियों को 20 अप्रेल को फिर मिटिंग बुलानी पड़ी। इस मिटिंग में बिचौलिये सरदार और उसके छुटभैय्यों ने खूब नाटक किया पर मजदूर टस से मस नहीं हुये। 1983 में फोर्ड की घटनाओं के बाद एस्कोर्ट्स में पहली बार दादागिरी से मजदूरों को चुप कराने की बिचौलियों की कोशिश फेल हो गई। मार-पीट की नौबत के बावजूद मजदूरों ने पचास परसैंट वर्क लोड बढ़ाने वाली एग्रीमेन्ट के खिलाफ हाथ उठाये——पक्ष में हाथ उठाने वाले ज्यादातर बाबु तबके के लोग थे। जिन पर इस एग्रीमेन्ट में वर्क लोड नहीं बढ़ाया जा रहा वैसे, बाबुओं को भी समझ लेना चाहिए कि वर्क लोड बढ़ाने से इन्सैन्टिव कम होगा इसलिये पैसे बाबुओं को भी कम मिलेंगे।

वर्क लोड बढ़ाने के खिलाफ एस्कोर्ट्स के मजदूर अड़े हैं। अपने गुस्से का इजहार करके मजदूरों ने मार्च के काम के लिये कुछ पैसे भी वसूले हैं। पर इतना काफी नहीं है। मैनेजमेन्ट-बिचौलिया गठजोड़ अब मजदूरों को बढ़ा वर्कलोड उठाने को मजबूर करने के लिये नरम और गरम हथकन्डे इस्तेमाल करेगा। इस जाल को काटने के लिये एस्कोर्ट्स मजदूरों का गुस्सा काफी नहीं है। मैनेजमेन्ट-बिचौलिये गठजोड़ के जाल को काटने के लिये मजदूरों द्वारा सचेत कदम उठाने जरूरी है। एस्कोर्ट्स मजदूरों से विचार-विमर्श का हम स्वागत करेंगे।

—×—

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

यूरोप, अमरीका, अफ्रीका, अरब देशों, चीन, नेपाल, पाकिस्तान और भारत सभी जगह खून खराबा हो रहा है। हावी नजरिये के अनुसार इसका मुख्य कारण शासन-तन्त्र की कमजोरी है। विभिन्न कारणों को गिनाया जाता है जिनकी वजह से सरकारी तन्त्र कमजोर पड़े हैं। भिन्न-भिन्न लोगों व पार्टियों को उसका जिम्मेदार ठहराया जाता है——नेहरू ने यह कर दिया, पटेल को मौका नहीं दिया आदि-आदि वाली बहसें भारत में हावी सोच की वजह से बसों-रेलों में भी खूब सुनी जा सकती है। इसलिये यहाँ के नेहरू समर्थक हों चाहे पटेल समर्थक, हिटलरवादी-स्तालिनवादी हों चाहे लिन्कनवादी-कैनेडीवादी, किसी भी देश में मची मार-काट का इलाज पुलिस और फौज को और मजबूत करना बताते है। जिनके शासनकाल में लाखों लोगों को मारा-काटा गया था, जर्मनी के उस हिटलर, चीन के माओ, रूस के स्तालिन को कानून-व्यवस्था कायम करने वालों के उदाहरणों के तौर पर पेश किया जाता है।

समाज में इस समय हावी विचार धारा के मुख्य धड़े के अनुसार हिंसा मानव चरित्र का अंग है। अतः इसके मुताबिक दो ही रास्ते हमारे पास हैं——शासन तन्त्र को हिंसा का एकाधिकार दे कर हिटलरी राज के साये में कानून-व्यवस्था वाला शासन अथवा गली-मोहल्ले-गांव-शहर में सब जगह गुन्डागर्दी वाली फुटकर हिंसा। छुट-पुट गड़बड़ के मामलों में हावी सोच वाले जो बुद्धिजीवी उदारवादी होते हैं वे भी संकट की स्थिति में आमतौर पर पूंजीवादी नजरिये के मुख्य धड़े के सुर में सुर मिला कर हिंसा की सरकारी मोनोपाली की वकालत करते हैं—फौज को पुकार करते है। वैसे, हावी सोच का धार्मिक रूप-रंग कलियुग का, खुदा के कहर का रोना रोता है और हिंसा से छुटकारे के लिये अवतार की, मसीहा की बाट जोहने के साथ धीरज से हिंसा को सहने की वकालत करता है।

दूसरा नजरिया, मार्क्सवादी दृष्टिकोण समाज में बढ़ रही हिंसा की जड़ पूंजीवादी व्यवस्था के गहराते संकट को बताता है। रूसी-मार्का हो चाहे अमरीकी-मार्का, पूंजीवाद के सब रूपों का संकट बढ़ रहा है। क्रान्तिकारी सोच के मुताबिक पूंजीवादी व्यवस्था को जब तक उखाड़-फेंका नहीं जायेगा तब तक इसका संकट बढ़ता ही जायेगा और परिणामस्वरूप समाज में हिंसा बढ़ती ही जायेगी। इस सोच के अनुसार आज जो हिंसा धर्मों, जातियों, देशों, इलाकों, भाषाओं आदि के झगड़ों के रूप-रंगों में नजर आती है वह वास्तव में पूंजीवादी व्यवस्था के गहराते संकट का लक्षण है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि **एक नजरिया जहां समाज में हिंसा के होने को अनिवार्य बता कर उसके फुटकर अथवा थोक रूपों में चुनने की मजबूरी पेश करता है वहां दूसरा नजरिया समाज में बढ़ती हिंसा को इस समाज व्यवस्था के गहराते संकट के लक्षण के तौर पर बताता है और वर्तमान में हिंसा से छुटकारा पाने के लिये पूंजीवाद के खिलाफ मजदूर क्रान्ति की वकालत करता है।**

——अ-जी

—0—

आटोपिन

मौत एक मजदूर की

5 अप्रेल को रात पाली में एक कैजुअल मजदूर फिसल कर गरम पानी के टैंक में गिर गया। बुरी तरह जल गये इस मजदूर की 8 अप्रेल को सफदरजंग अस्पताल में मृत्यु हो गई। किसी कैजुअल या ठेकेदार के मजदूर का एक्सीडेन्ट में मर जाना फरीदाबाद में आम बात है। पर आटोपिन में इस बार कुछ नया हुआ है।

एक्सीडेन्ट में मरे मजदूर की लाश को अस्पताल से रफा-दफा करने की मैनेजमेन्ट की कोशिशें मजदूरों ने फेल कर दी और 9 अप्रेल को लाश फैक्ट्री के गेट पर ले आये। मजदूरों ने फैक्ट्री में काम बन्द कर दिया और मृत मजदूर के परिवार को मुआवजा देने की डिमान्ड की। कैजुअल मजदूर के लिये परमानेन्ट मजदूरों ने चक्का जाम कर दिया! आटोपिन के वर्करों ने मजदूर एकता का एक अच्छा उदाहरण पेश किया है।

कैजुअल वर्कर के परिवार को मुआवजे की डिमान्ड को मैनेजमेन्ट ने लीपा पोती से टालने की कोशिश की पर मजदूर अड़ गये। चक्का जाम करके लाश के इर्द-गिर्द मजदूर एकत्र हो गए। इस प्रकार दो शिफ्ट काम बन्द रहने पर मजबूर हो कर मैनेजमेन्ट ने मृत मजदूर के परिवार को साठ हजार रुपये मुआवजा दिया।

मजदूरों की इस एकता और संघर्ष को देख कर मैनेजमेन्ट ने मजदूरों को कुचलने की तैयारी शुरू कर दी है। सेक्यूरिटी के नाम पर कुछ लठैतों को फैक्ट्री गेट पर तैनात कर दिया है और मजदूरों में फूट डालने के लिए दूसरा झन्डा भी गेट पर टंगवा दिया है। मैनेजमेन्ट की जेब में बैठे पीले-लाल-हरे झन्डों के ठेकेदारों की मजदूरों को आपस में लड़ाने की हरकतों को आटोपिन मजदूर भुगत चुके हैं। वे देख चुके हैं कि लम्बी-चौड़ी हांकने वालों के चक्कर में पड़ने पर नुकसान मजदूरों का ही होता है। मैनेजमेन्ट, उसके लठैतों और बिचौलियों से निपटने के लिए मजदूरों को चौकस रहना होगा तथा सचेत व संगठित प्रयास करने होंगे।

-o-

स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेर सिंह द्वारा आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अलकनन्दा प्रिंटिंग प्रेस C-III/206, सं. गां. मेमो. न. से मुद्रित